हरियाणा में असहयोग आंदोलन – एक अध्ययन

प्रदीप कुमार
रिसर्च स्कॉलर
इतिहास विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक(हरियाणा)

1920 का वर्ष भारतीय इतिहास में बड़ा महत्त्व रखता है, प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद भारतीय जनता को अंग्रेजी हुकुमत से कुछ उम्मीदें थी, जिन पर अंग्रेजों ने पानी ही फेर दिया। परन्तु अब गांधी जी चुप होने वाले नहीं थे। उन्होंने अंग्रेजों को केसर–ए–हिन्दी की उपाधि, जुलवार मैडल, बोअर वार मैडल सरकार को वापिस कर दिये। अब वे अंग्रेजों के विरोधी बन गये। असहयोग आन्दोलन की शुरूआत 1 नवम्बर, 1920 को हुई। उसी दिन से लोगों में तेजी से जोश सा उमड़ने लग गया। कलकता अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा गया इस में दो उद्देश्य थे – रचनात्मक व नकारात्मक। हरियाणा में भी असहयोग आन्दोलन तीव्र गति से फैला। इसमें हजारों लोग शामिल हुए। यहां पर अनेक कमेटियां बनाई गई। रोहतक में भी एक प्रचार कमेटी बनाई गई, जिसके अध्यक्ष पंडित श्री राम शर्मा थे।

दूसरी कमेटी में रूप राम व वैश्य हाई स्कूल के दो विद्यार्थी व एक अध्यापक शामिल थे। इन्होंने बहू, मदीना व महम आदि गांवों का दौरा कर असहयोग आन्दोलन में सहयोग के लिए भाषण दिए व तीसरी कमेटी में राम लाल व दौलत राम गुप्ता थे। इन्होंने कलानौर, केलंगा, खरक, सुण्डाना आदि गावों का दौरा किया।[1]

अब रोहतक असहयोग आन्दोलन का गढ बन गया था। 8 अक्तूबर, 1920 को रोहतक के रामलीला मैदान में एक बडी रैली का आयोजन किया गया। इसमें महात्मा गांधी मुख्य अतिथि थे। गांधी जी के अलावा मोहम्मद अली, शौकत अली ने भी इसमें भाग लिया। महात्मा

गांधी जी ने अन्य श्रोताओं को प्रेरणा देते हुए कहा कि हमें बेईमान सरकार को सहयोग नहीं देना चाहिए।[2]

22 अक्तूबर, 1920 को भिवानी मे अम्बाला डिवीजनल पोलिटिकल कांफ्रैन्स का आयोजन किया गया, जिसमें महात्मा गांधी, मौलाना आजाद, मौलाना अली, मौलाना शौकत अली, डॉक्टर अन्सारी, लाला दुनीचन्द, देवदास गांधी आदि नेता भी शामिल हुए। इस सभा की अध्यक्षता मुरलीधर ने की थी। इसमें लगभग 2,000 प्रतिनिधि तथा 8,000 दर्शक उपस्थित हुए। यहां महात्मा गांधी जी तथा अन्य नेताओं ने असहयोग आन्दोलन का कार्यक्रम जनता के समक्ष रखा। गांधी जी ने यही पर प्रथम बार ब्रिटिश सरकार के लिए शैतानी सरकार शब्द का प्रयोग किया था।[3]

6–8 नवम्बर, 1920 को रोहतक में भी एक अन्य कांफ्रैंस हुई। लाहौर के प्रसिद्ध नेता चौधरी रामभज दत्त ने इस कांफ्रैन्स की अध्यक्षता की। लाला शामलाल स्वागत समिति के प्रधान थे। जब इस क्रांफेस में असहयोग आन्दोलन प्रस्ताव के अनुमोदन की बात चली तो स्थानीय कांग्रेस जन नेता दो दलों में बंट गए। किसान नेता चौधरी छोटूराम असहयोग के विरोध में थे।[4] इन्होंने कहा कि अगर उन्होंने ऐसा किया तो सरकार उन की भूमि छीन लेगी फिर वे क्या खांएगे।

छोटूराम के इतना कहने पर किसी ने शर्म–शर्म की आवाज कर दी। इस पर झगड़ा हो गया। इस स्थिति में स्वामी सत्यदेव व नेकीराम शर्मा को चोट भी आई साथ ही चौधरी रामभज दत को बेइज्जत भी किया गया। अतः अन्त में सभा विसर्जित करनी पड़ी। अगले दिन असहयोग प्रस्ताव तो पास हो गया, लेकिन कांग्रेस ने महान जाट नेता चौधरी छोटूराम का

समर्थन खो दिया। अतः यह सत्य है कि एक महान नेता को कांग्रेस ने हरियाणा में खो दिया।[5] इस विघटन के बाद भी असहयोग आन्दोलन काफी लोकप्रिय रहा। बहुत से लोगों ने अंग्रेजी सरकार से प्राप्त माननीय पद और पदक लौटा दिए। गांधी जी ने भी अपना 'केसर–ए–हिन्द' पदक लौटा दिया। जमनालाल बजाज ने 'बहादुर' की उपाधि छोड़ दी। मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास, राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालाचार्य जैसे बड़े–बड़े वकीलों ने अपनी प्रतिमाह की आमदनी की वकालत छोड़ दी। सुभाष चन्द्र बोस ने आई. सी. एस. से त्यागपत्र दे दिया। कई नेताओं ने चुनावों से अपना नाम वापिस ले लिया।[6]

इस प्रकार हरियाणा में भी आन्दोलन से प्रभावित होकर लाला मुरलीधर (अम्बाला) ने 'राय बहादुर' का खिताब लौटा दिया। नाजी बेग व गणपत राव गोकलचन्द, नैन सुखदास (भिवानी) ने कुर्सी मशीनी मैडल व प्रमाण पत्र लौटा दिए। मीथाथल (हिसार) के जमींदार अखेराम ने अपना 'स्कूटिंग बैज' और 'सनद' सरकार को लौटा दी। गांधी जी ने आहवान पर बहुत से विद्यार्थी भी उनके साथ मिल गए। उन्होंनें स्कूल कालेज छोड़ दिये।

रोहतक के गौड़ स्कूल के सभी विद्यार्थियों ने स्कूल का परित्याग कर दिया। इस प्रकार छात्रों के बहिष्कार से जाट स्कूल, रोहतक भी बन्द हो गया। 30 नवम्बर, 1920 को भिवानी के विद्यार्थियों ने शपथ ली कि जब तक विदेशी शासन नहीं हट जाता तब तक स्कूल नहीं जाएंगे। हिसार में भी ऐसा ही किया गया। इस तरह हिन्दू हाई स्कूल, सोनीपत पंजाब विश्वविद्यालय से अलग हो गया बहादुरगढ़ हाई स्कूल से एक रामचन्द्र नामक विद्यार्थी नेता और उसके 21 साथी इस आन्दोलन में सामने निकल कर आए।[8]

इन दिनों अनेकों स्कूल कायम हुए। 17 फरवरी 1920 को लगभग 25,000 लोगों की उपस्थिति में गांधी जी ने वैश्य राष्ट्रीय हाई स्कूल की नीव रखी, जहां अंग्रेजी स्कूल छोड़कर आने वाले विद्यार्थी पढ़ सकते थे। जाट स्कूल रोहतक ने भी राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया। ऐसे ही भिवानी के वैश्य हाई स्कूल को भी फ्री नेशनल स्कूल में परिवर्तित कर दिया गया।[9] हालांकि करनाल व अम्बाला में बहिष्कार सफल नहीं हो सका। केन्द्रीय व प्रांतीय स्तर पर विधान परिषदों का बहिष्कार किया गया। नेकी राम शर्मा व के. आर. देसाई ने अनेक सम्मेलन किये और लोगों को चुनावों में भाग न लेने की अपील की। पूरे हरियाणा में 25–30 वकीलों ने न्यायालयों से बायकाट किया। मई 1921 में भिवानी में राष्ट्रीय न्यायालय की स्थापना हुई, पर वे न्यायालय व पंचायतें सफल न हो सकी। विदेशी माल का बहिष्कार कई दिनों से जोरों पर था। हांसी के मुसलमानों ने भी बहिष्कार का निश्चय किया। हिसार, सिरसा, भिवानी के कपड़ा व्यापारियों ने भी विदेशी कपड़ों का व्यापार न करने की शपथ ली।

स्वदेशी आन्दोलन का प्रचार करते हुए मदनमोहन मालवीय व मोहम्मद अली ने रोहतक जिले का 15 अक्टूबर को दौरा किया और लोगों को खद्दर पहनने को प्रोत्साहित किया। इसके परिणामस्वरूप झज्जर के 32, बहादुरगढ़ के 17 व बेरी के 17 ही कपड़ा व्यापारियों ने विदेशी कपड़ा न खरीदने की शपथ ली। अम्बाला में कांग्रेस वांलटियर्स लगभग 60 कपड़े के व्यापारियों के पास गए और उनसे प्रार्थना की कि विदेशी कपड़ा न मंगवाए। उनमें से 45 ने उनकी मांग तुरन्त मान ली।[10]

करनाल और अम्बाला जिले में स्वामी श्रद्धानन्द ने लोगों को खद्दर व स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने की सलाह दी और साथ ही इसे लोगों का कर्त्तव्य भी बताया। करनाल में

खादी की प्रदर्शनी भी हुई थी। मई 1921 में बेरी में एक कपड़े की फैक्टरी लगाई गई। जिसे हरियाणा में स्वतन्त्रता के इतिहास में परिवर्तन बिन्दू के नाम से जाना जाता है।[11]

शराब की अनेक दुकानों पर कांग्रेस के कार्यकत्ताओं तथा वांलटियर्स ने पर पिकिटिंग भी की थी। इस तरह रोहतक में शराब के ठेके की वार्षिक नीलामी के समय कोई बोली ही नही देने गया। अम्बाला में पूरी तरह शराब की दुकानों को घेर लिया गया। कई वांलटियर्स की पुलिस ने धर पकड़ भी की तथा पुलिस ने उन पर लाठी चार्ज भी किया।[12]

असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम को सफलतापूर्वक चलाने के लिए हर जिले, तहसील, शहर, कस्बे और बड़े–बड़े गांवों में कांग्रेस कमेटियों की स्थापना तथा उनके संगठन को मजबूत बनाने का क्रियात्मक आन्दोलन भी इन्हीं दिनों चला। रोहतक के कांग्रेसी नेताओं ने सारे जिले में खूब जोर–जोर से प्रचार किया। जिसमें श्री राम शर्मा ने सोनीपत, बेरी, झज्जर, डीघल, कोसली आदि स्थानों में प्रचार किया। दौलत राम व श्याम लाल ने कलानौर, काहनौर, निगाना आदि गांवों का दौरा किया।[13]

नेकी राम शर्मा, दुनीचन्द, शामलाल तथा के. आर. देसाई ने हिसार के दौरे के साथ–साथ अम्बाला और करनाल का दौरा भी किया। यद्यपि उन्होंने गुड़गांव का दौरा भी किया लेकिन वहाँ कोई स्थानीय नेता न होने से उन्हें कोई खास सफलता प्राप्त नहीं हुई पर अन्य स्थानों पर इन दौरों के परिणामस्वरूप नए लोग कांग्रेस में अवश्य शामिल हुए व पुराने जो अब तक कांग्रेस के कार्यक्रमों के प्रति अधिक जागरूक नहीं थे वे अब कर्मठ कार्यकर्ता बन गए।[14]

असहयोग आन्दोलन के बढ़ते हुए कार्यक्रम से सरकार घबरा गई। उसने नेताओं तथा खास–खास कार्यकत्ताओं को पकड़ना आरम्भ कर दिया। हिसार जिले से सर्वप्रथम प्रसिद्ध नेता पण्डित नेकीराम शर्मा को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। जहां उन्हें काफी यातनाएं दी गई। उसके बाद लाला श्यामलाल सत्याग्रही लाला मेला राम, लाला गोकल चन्द्र, चौधरी अखेराम, लाला देवी सहाय, हरदेव सहाय तथा अन्य 20 के करीब कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।[15]

झज्जर जिले के हाजी खैर मोहम्मद राव मंगली राम खातीवास व चौ. हबीबुल्ला खा तलाव और दिवान चन्द्र आदि को गिरफ्तार करके रोहतक जेल में भेज दिया गया। इस आन्दोलन में हरियाणा से सैंकड़ों आदमी जेल गए। जिनमें लाला दुनीचन्द, अम्बावली लाल मुरलीधर, बैरिस्टर, बसीर अहमद अम्बाला, श्री काका राम कैथल, लाला देश बन्धु गुप्ता पानीपत, लाला श्याम लाल वकील हिसार, जमींदार अखेराम मिताथल, लाला बिरछी चन्द मोढा, लाला धनपत जैन और पण्डित रामकुमार व विद्यात, भिवानी आदि मुख्य थे।[16]

एक नेता की गिरफ्तारी के पश्चात् दूसरा नेता उसकी जगह ले लेता और इस तरह वातावरण हर प्रकार से पहले जैसा ही बना रहा। सरकार ने गिरफ्तार व्यक्तियों पर बड़े अत्याचार किए। जहां कहीं किसी आन्दोलनकारी को पुलिस ने शराब को दुकानों पर पिकेटिंग करने तथा विदेशी कपड़ों की होली जलाते देखा तो उन्हें बुरी तरह पीटा जाता था। रोहतक, करनाल, झज्जर, हिसार, अम्बाला में ऐसी अनेक वारदातें हुई। फिर भी आन्दोलनकारी सरकार का बहिष्कार करते रहे।[17]

सरकार ने वफादार आदमियों के द्वारा भी आन्दोलन को दबाने का प्रयास किया। उन्होंने 'हरियाणा राजभक्त सभा, राजा प्रजा – हितकारिणी सभा, अमल सभा बनाकर लोगों को खूब गुमराह किया गया पर आन्दोलन बिना रोक–टोक के चलता रहा। हालांकि इन संस्थाओं ने कांग्रेस सम्मेलनों में बाधा डाली, हड़तालों को तोड़ने में सरकार की मदद की, साथ ही कांग्रेस की गतिविधियों को सरकार के साथ मिलकर प्रभावित किया।[18]

लेकिन इतना होने पर भी जन आन्दोलन पूरे जोश व अपनी चरम सीमा पर था, तो अचानक 5 फरवरी, 1922 को चौरी–चौरा में कांग्रेस और खिलाफत आन्दोलनकारियों का एक जुलूस निकल रहा था। पुलिस वालों ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया। जुलूस में शामिल एक जत्थे ने पुलिस पर हमला बोल दिया। सिपाही भागकर थाने में घुस गए, तो भीड़ ने थाने में आग लगा दी। जिसमें 22 पुलिस कर्मी मारे गए।

इस प्रकार 12 फरवरी, 1922 को आन्दोलन वापिस ले लिया गया और इस में बहुत नेता गांधी जी से नाराज हो गये और यह आन्दोलन बिना कोई निर्णय तक पहुँचे समाप्त हो गया।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि असहयोग आन्दोलन ने न केवल भारत में ही बल पकड़ा बल्कि हरियाणा की जनता ने भी इस में बढ़–चढ़ कर भाग लिया और साबित कर दिखाया कि वो भी अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए एक–जुट होकर लड सकते हैं। और ये आन्दोलन जन–आन्दोलन का स्वरूप धारण कर गया।

सन्दर्भ सूची

1. चन्द्र जगदीश, फ्रीडम स्ट्रगल इन हरियाणा (1919–1947) कुरूक्षेत्र, 1982, पृ0 41
2. जुनेजा एम. एम., पं. नेकीराम शर्मा एण्ड फ्रीडम मूवमेंट, हिसार, 1979, पृ0 25
3. यादव के. सी. हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति, मनोहर पब्लिकेशजर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, 2003, पृ0 214–15
4. वही, पृ0 215
5. यादव के. सी. हरियाणा का इतिहास, भाग–3, पृ. 16
6. चन्द तारा, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास भाग–3, सूचना व प्रसारण विभाग, भारत सरकार, 1857, पृ0 529
7. जाखड रामसिंह, स्वतन्त्रता संग्राम में हरियाणा का योगदान, हरियाणा साहित्य भवन, रोहतक
8. यादव, के. सी., हरियाणा इतिहास व संस्कृति, पूर्वाक्त, पृ0 216
9. वही, 216
10. वही, 217
11. चन्द्र जगदीश, फ्रीडम स्ट्रगल इन हरियाणा, कुरूक्षेत्र, 1972, पृ0 55–56
12. मित्तल एस. सी. हरियाणा–ए हिस्ट्रोरिकल, परोस्पैक्टिव, नई दिल्ली, 1986, पृ0 164
13. यादव के. सी., पूर्वाक्त, पृ0 218
14. शर्मा श्रीराम, पूर्वोक्त, पृ0 86
15. जुनेजा, एम. एम., पूर्वोक्त, पृ0 72
16. यादव के. सी., पूर्वोक्त, पृ0 164

17. जुनेजा एम. एम., पूर्वोक्त, पृ0 80

18. जखड़ राम सिंह पूर्वोक्त, पृ0 56